# कलीसिया अध्याय 1

| 1. | **प्रार्थना** |
|---|---|

**समूह अगुवा।** परमेश्वर की आत्मा द्वारा अगुवाई पाने, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता तथा उसकी आवाज़ सुनने के लिए **प्रार्थना** करें।

अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

| 2. | **बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]*<br>**मरकुस 1:1-4:20** |
|---|---|

**अपनी बारी** आने पर संक्षेप में **साझा करें** कि आपने दिये गये अनुच्छेद (मरकुस 1:1-4:20) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

| 3. | **याद करना** (5 मिनट) *[मसीह चरित्र]*<br>**(1)2 कुरिन्थियों 3:18** |
|---|---|

**स्मरण वचनों की पाँचवी श्रृंखला (ड़) 'मसीही चरित्र' से सम्बन्धित है।** पाँच स्मरण पदों के शीर्षक हैं:

(1) मसीह की समानता। 2 कुरिन्थियों 3:18

(2) शुद्धता। 1 पतरस 2:11

(3) प्रेम । मरकुस 12:12:30-31

(4) विश्वास। रोमियों 4:20-21

(5) नम्रता। फिलिप्पियों 2:2-4

दो लोग साथ मिलकर **मनन, स्मरण तथा पुनरावलोकन** करें।

**(1) मसीह की समानता: 2कुरिन्थियों 3:18।** परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है,जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।

| 4 | **बाइबल अध्ययन** (85मिनट) *[कलीसिया के पर्व]*<br>**क्रिसमस : मसीह के जन्म का स्मरणोत्सव** |
|---|---|

**परिचय**- क्रिसमस मसीहीयों का वह उत्सव है जिसमें हम यीशु मसीह के जन्म को मनाते हैं। इस अध्याय हम सीखेगें कि बाइबल यीशु मसीह के इस संसार में प्रथम आगमन के बारे में क्या कहती है। हम जानेगें कि उसके प्रथम आगमन के बारे में पुराने नियम में किस प्रकार भविष्यद्वाणियां की गयी थीं,इस धरती पर उसके जन्म लेने पर क्या हुआ, और इस संसार में उसका जन्म लेना हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है।

## क. प्रारम्भिक मानवीय इतिहास लोगों के प्रति परमेश्वर की प्रथम प्रतिज्ञा का वर्णन करता है।

बाइबल में सर्वप्रथम प्रतिज्ञा उत्पत्ति 3:15 में दी गयी है। जब धरती पर कोई पाप नहीं था शैतान, पहले मानव अर्थात आदम और हव्वा के पास सर्प के रूप में आया। इस सन्दर्भ में चली शक्तिशाली बातचीत से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि इस सर्प के भीतर दुष्ट छुपा हुआ था। इस दुष्ट को आज हम ''शैतान'' के नाम से जानते हैं, जिसका अर्थ निन्दक या मुद्दई होता है, जिसका मतलब विरोधी वरन 'बड़ा अजगर' होता है (प्रकाशितवाक्य 12:9)। उसने प्रथम पुरूष और स्त्री की

परीक्षा की और उन्हें परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने के लिए उकसाया जिसके परिणामस्वरूप वे निष्कपट अवस्था से गिरकर पाप की अवस्था में पहुँच गये।

परमेश्वर ने उन्हें दण्ड देते हुए कहा कि शैतान की 'सन्तानों' जो कि दुष्टात्माएं व दुष्ट लोग हैं जो सदा शैतानी बातों का पक्ष लेते हैं,तथा स्त्री के वंश जिसका शाब्दिक अर्थ "बीज"अर्थात जो लोग सदा परमेश्वर का पक्ष लेते हैं, के बीच में सदा के लिए शत्रुता व लड़ाई बनी रहेगी। भविष्य में स्त्री का वंशज शैतान का सिर अपने पैरों से कुचलेगा, हालांकि शैतान भी उसकी एड़ी को डसेगा और उसे नुकसान पहुँचाएगा। इस तरह से परमेश्वर ने पहले मनुष्य और शैतान की घनिष्ठ व विनाशक मित्रता को सदा की शत्रुता में परिवर्तित कर दिया। परमेश्वर ने शैतान के वंशजों व स्त्री के वंशजों के बीच लगातार लड़ाई की चर्चा की: और परमेश्वर ने निर्णायक विजय के बारे में भी बताया।

नये नियम के प्रकाशन में, हम जानते हैं कि यह लड़ाई अन्ततः शैतान व यीशु मसीह के बीच में होगी। यीशु पहले पुराने नियम के लोगों द्वारा सताया जाएगा और बाद में वह अपनी देह में क्रूस की यातना सहेगा। यीशु मसीह के प्रथम आगमन पर, उसने शैतान की शक्ति को नाश कर दिया लेकिन अभी तक उसकी शक्ति का अन्त नहीं हुआ है। नया नियम प्रगट करता है कि परमेश्वर ने भविष्यद्वाणी (या उद्धार की प्रतिज्ञा) के द्वारा यह प्रगट किया कि अन्तिम युद्ध दो व्यक्तित्वों के बीच में होगा, जिन्हें हम शैतान व यीशु मसीह के नाम से जानते हैं, यीशु तो एक स्त्री से उत्पन्न होगा। शैतान यीशु पर आक्रमण करके उसे मारने की कोशिश करेगा, क्योंकि परमेश्वर ने यह भविष्यवाणी की है कि वह शैतान के सिर को कुचलेगा। हालांकि अवश्य है कि यीशु को "शैतान द्वारा उसकी एड़ी में डसे जाने" की वजह से तकलीफें उठानी पड़ेंगी और वह क्रूस पर मारा जाएगा, लेकिन वह फिर भी शैतान पर विजय प्राप्त करके उसे कुचल डालेगा। अन्त में यीशु विजयी ठहरेगा।

## ख. पुराने नियम का इतिहास उस लड़ाई को दर्शाता है जो परमेश्वर की प्रतिज्ञा के साकार होने में बाधा डालने का प्रयास करती है।

### 1.आदम से नूह के समय तक भड़की लड़ाईयाँ

**( 1 ) आदम और हव्वा**

परमेश्वर ने प्रथम पुरूष व स्त्री अर्थात आदम और हव्वा से उद्धार की प्रतिज्ञा की (उत्पत्ति 3:15)। स्त्री से उत्पन्न कोई जन शैतान के सिर को कुचलेगा। प्रारम्भ में आदम और हव्वा को केवल दो ही सन्तानें हुई, केन और हाबिल। केन, हाबिल से जलने लगा और क्रोध में आकर उसने हाबिल की हत्या कर दी (उत्प 4:1-8)। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में ही शैतान स्त्री के वंश को नाश कर देना चाहता था ताकि उद्धार के निमित्त परमेश्वर की प्रतिज्ञा कभी पूरी न हो सके। लेकिन परमेश्वर ने आदम और हव्वा अर्थात प्रथम पुरूष व स्त्री को और भी बच्चे दिये(उत्प 5:1-5)। इस तरीके से मानवजाति का विकास होता रहेगा और परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी हो जाएगी! इस तरह से मानवजाति विकास होता रहा तथा किसी व्यक्ति के द्वारा उद्धार दिलाने की प्रतिज्ञा के पूर्ण होने की सम्भावनाएं भी ज़िन्दा रहीं, जो किसी मनुष्य के वंश में पैदा होने वाला था।

**( 2 ) शेत व नूह**

आदम और हव्वा का तीसरा बेटा शेत,पहले से ही परमेश्वर की उद्धार की प्रतिज्ञा को ढोने वाले के रूप में नियोजित था(उत्प.5:6-32)। बहुत वर्षों के बाद, पृथ्वी पर लोगों की संख्या बहुत बढ़ गयी। परमेश्वर का ज्ञान जो आदम और हव्वा ने अपने वंशजों तक पहुँचाया था, इतना मिश्रित  हो गया था कि मानव जाति ने पूरी तरह से भ्रष्ट जीवन शैली के प्रति अपने आपको समर्पित कर दिया। "परमेश्वर के पुत्र"(जो कि शेत के वंशज थे और जो परमेश्वर का अनुसरण करने वाले लोगों को दर्शाते हैं) "केन की पुत्रियों" से विवाह करने लगे (जो केन के वंशजों को दर्शाते हैं अर्थात वे लोग जिन्होंने दूसरे मनुष्यों को देवता मानकर अनुसरण करना प्रारम्भ कर दिया)(उत्प.6:1-4;व्यव 7:1-4; 2कुरि 6:14 को पढ़ें)। जिसके परिणामस्वरूप धरती पर दुष्टता अत्यधिक बढ़ गयी। "यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथ्वी पर बढ़ गई है और उनके मन के विचार में जो कुछ उत्पन्न होता है, वह निरन्तर बुरा ही होता है(उत्प 6:5)। इसलिए परमेश्वर ने सम्पूर्ण मानवजाति को बाढ़ के द्वारा नाश करने का विचार किया (उत्प 6:5-7,11-13)। एक बार फिर से ऐसा प्रतीत होने लगा कि शैतान उस मानवजाति को नाश करने में सफल हो जाएगा जिसमे परमेश्वर के उद्धार की प्रतिज्ञा का बीज विद्यमान था।

लेकिन परमेश्वर को एक ऐसा व्यक्ति मिल गया जो उस काल में एक निष्कलंक जीवन व्यतीत कर रहा था:नूह। "वह परमेश्वर के साथ चला करता था "(उत्प 6:8-9)। परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार को बाढ़ में नाश होने से बचा लिया

(उत्प.6:14-8:22)। इस तरह मानवजाति प्रगतिशील रही और मनुष्यों में से ही एक उद्धारकर्ता के पैदा होने की उम्मीद बनी रही।

## 2.नूह से लेकर यहूदा तक यह लड़ाई चलती रही

**( 1 ) अब्राम( ई.पू 2157-1992 )**

ई.पू. इक्कीसवीं शताब्दी में, आने वाले उद्धारकर्ता के द्वारा उद्धार की प्रतिज्ञा अब्राहम(अब्राम) और सारा(सारै)को दी गयी थी। परमेश्वर ने उनसे वायदा किया कि उनके वंशज (शाब्दिक अर्थ:उनका बीज)'आकाश के तारों के समान' तथा 'समुन्द्र के बालू के किनकों के समान' अनगिनत होगें। और परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की कि भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे"(उत्पत्ति 12:3)(उत्प 11:26-32;उत्प.15:5;उत्प 22:17-18)। मानवीय दृष्टिकोण से बात करें तो यह प्रतिज्ञा कभी पूरी नहीं हो सकती थी,क्योंकि अब्राहम व सारा दोनो ही बहुत बूढ़े थे, उनकी देह में कोई शक्ति नहीं बची थी और सारा बांझ थी। एक बार फिर ऐसा प्रतीत होता था मानो शैतान जीत जाएगा।

परन्तु तभी एक चमत्कार हुआ। जब अब्राहम सौ वर्ष का था,परमेश्वर ने चमत्कारी ढंग से अब्राहम व सारा को पुत्र की आशीष दी जिसका नाम इसहाक रखा गया(उत्प 21:1-7)! परमेश्वर के उद्धार की प्रतिज्ञा की लाल रेखा लगातार आगे बड़ती चली गयी।

**( 2 ) इसहाक ( 2067-1887 ई.पू )**

आने वाले उद्धारकर्ता के द्वारा उद्धार प्रदान करने की प्रतिज्ञा इसहाक को दी गयी थी(उत्प.26:4)लेकिन उसकी पत्नि रिबका भी बांझ थी(उत्प 25:21)। एक बार फिर ऐसा लगा कि शैतान जीत जाएगा।

परन्तु इसहाक ने परमेश्वर से प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसे एसाव व याकूब नामक दो बच्चे दिये।

**( 3 ) याकूब ( 2007-1860 ई पू )** आने वाले उद्धारकर्ता के द्वारा उद्धार प्रदान करने की प्रतिज्ञा याकूब को दी गयी थी(उत्पत्ति 28:13-14) लेकिन उसका भाई एसाव उसे मारना चाहता था, क्योंकि याकूब ने छल से एसाव के पहिलौठे का अधिकार छीन लिया था(उत्प 27:41)। एक बार फिर ऐसा लगा कि शैतान जीत जाएगा।

लेकिन परमेश्वर ने स्वयं याकूब से यह वायदा किया था कि जहां जहां वह जाएगा परमेश्वर उसकी सुरक्षा करेगा(उत्प 28:15)। याकूब जीवित रहा और परमेश्वर के उद्धार की प्रतिज्ञा की लाल रेखा लगातार आगे बड़ती चली गयी।

**( 4 ) यहूदा**

आने वाले उद्धारकर्ता के द्वारा उद्धार प्रदान करने की प्रतिज्ञा याकूब को दी गयी थी,जो याकूब और लिया से उत्पन्न हुआ था(उत्प 49:10)। राजकीय अधिकार तब तक यहूदा के घराने से दूर नहीं होगा जब तक कि प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्ता जन्म नहीं ले लेता। वह राजा होगा और धरती के सारे कुल एक दिन उसकी आज्ञा का पालन करेगें(यशा 45:22-23;फिलि 2:9-11)

## 3.यहूदा से लेकर मूसा तक चलने वाला संघर्ष

**( 1 ) याकूब व यहूदा के वंशज: इस्राएली।**

पन्द्रवीं शताब्दी से लेकर ग्यारहवीं ई.पू शताब्दी के बीच आने वाले उद्धारकर्ता द्वारा उद्धार करने की प्रतिज्ञा इस्राएलियों को दी गयी। क्योंकि शैतान कुलपतियों अर्थात अब्राहम,इसहाक और याकूब को नष्ट करने में असफल रहा,उसने इस्राएलियों के विरूद्ध मोर्चा खोल लिया क्योंकि वे याकूब के वंशज थे(उत्प 32:28)। इस्राएलियों के लिये यह नियुक्त कर दिया गया था कि उन्हीं में उद्धारकर्ता को जन्म लेना है (यूहन्ना 4:22)। जिन 430 वर्षों में इस्राएलियों ने मिस्र में समय बिताया, उस दौरान उसकी जनसंख्या काफी बढ़ गयी (निर्गमन 12:40),वे एक बड़ी जाति बन गये। अन्ततः मिस्र में एक ऐसा राजा खड़ा हुआ जो युसुफ को नहीं जानता था। उसने इस्राएलियों पर तरह तरह से दबाव बनाया और अन्ततः उसने उनके बालकों को मारने का आदेश दे दिया(निर्गमन 1:7-22)। एक बार फिर ऐसा लगने लगा मानो कि शैतान 'स्त्री के बीज' को नाश करने में कामयाब हो जाएगा।

लेकिन परमेश्वर ने इस्राएलियों की सुरक्षा की। क्या आप इस बात पर विश्वास करेगें कि परमेश्वर ने ठीक राजा के महल में मूसा को खड़ा किया और बाद में परमेश्वर ने उसे इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से बाहर लाकर प्रतिज्ञा के देश तक ले जाने के लिए अगुवा ठहराया(निर्गमन 3:1-12)

**( 2 ) मूसा ( 1527-1407 ई.पू )**

मरूस्थल से होकर प्रतिज्ञा के देश तक की यात्रा के दौरान,इस्राएली कई बार विश्वास से भटककर मूर्तिपूजा करने लगे। उन्होंने सोने का बछड़ा बनाया और वे उसकी पूजा करने लगे(निर्गमन 32:1-6)। परमेश्वर बहुत क्रोधित हुआ और वह मूसा को छोड़कर समस्त इस्राएलियों को मारना चाहता था(निर्गमन 32:10)। एक बार फिर ऐसा लगा कि शैतान जीत जाएगा।

लेकिन मूसा ने पापी राष्ट्र की ओर से मध्यस्थता की प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुन ली(निर्गमन 32:11-14)और इस्राएलियों को बक्श दिया। परमेश्वर ने मूसा की प्रार्थना सुनी। यहां पर हम मूसा को यीशु मसीह के प्रतीक अर्थात एक मध्यस्थ के रूप में देख सकते हैं, जिसने न केवल अपने लोगों के लिए प्रार्थना की वरन उनके लिए प्राण भी दे दिये(इब्रानियों 7:25-28)।

## 4.मूसा से लेकर दाऊद तक संघर्ष का जारी रहना।

**दाऊद (राज्य किया: 1011-971 ई पू)**

**ग्यारहवीं शताब्दी के दौरान,** आने वाले उद्धारकर्ता द्वारा उद्धार करने की प्रतिज्ञा दाऊद को दी गयी। दाऊद, यहूदा के गोत्र का वंशज था। 1 इतिहास 17:11-14 में एक मसीही सम्बन्धी भविष्यवाणी को पढ़ें। परमेश्वर ने दाऊद के पुत्रों(वंशज) की राजगद्दी सदा के लिए स्थिर करने की प्रतिज्ञा की: जिसका नाम यीशु मसीह हुआ। भविष्य में प्रगट होने वाला यह राजा "परमेश्वर का घर" स्थापित करने वाला था: जिसे हम कलीसिया के नाम से जानते हैं (2कुरिन्थियों 6:16;इफिसियों 2:20-22; 1 पतरस 2:4-6;9-10)। परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की कि इस राजा का सिंहासन सदा काल तक स्थिर रहेगा। (यशायाह 9:6;मत्ती 12:28-30;प्रकाशितवाक्य 17:14;प्रकाशितवाक्य 19:16)। परमेश्वर ने उससे यह वायदा किया कि "वह उसका पिता ठहरेगा और वे उसकी सन्तान कहलाएंगे"(भजन 2:7; मत्ती 3:17; इब्रा 1:5)। यिर्मयाह 23:5 में हम पढ़ते हैं,"देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में से एक धर्मी अंकुर उगाऊँगा,और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा।" क्योंकि परमेश्वर ने ये प्रतिज्ञाएं दाऊद से की थी इसलिए शैतान दाऊद को नाश करना चाहता था। गोलियत ने तथा शाऊल ने दो बार भाले से दाऊद को मारने का प्रयास किया परन्तु असफल रहे(1शमूएल 18:10-11)। उसके बाद दाऊद के अपने बेटे,अबशालोम,ने अपने देश के कई लोगों के साथ मिलकर गोष्टी की और दाऊद को मारने का प्रयास किया, लेकिन वह भी असफल रहा(2शमूएल 15:1-19:43)। हर बार ऐसा प्रतीत होता था मानो शैतान अब जीतने वाला है।

**लेकिन** बाइबल हमें सिखाती है कि कोई भी परमेश्वर को उसकी योजना पूरा करने से नहीं रोक सकता। "सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाई है,"नि:सन्देह जैसा मैंने ठान लिया है,वैसा ही हो जाएगा,और जैसी मैंने युक्ति की है वैसी ही पूरी होगी। क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है और कौन उसको टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोक सकता है?"(यशायाह 14:24,27)। दाऊद नहीं मारा गया और इस तरह परमेश्वर की उद्धार की योजना निरन्तर आगे बढ़ती गयी।

## 5.दाऊद से लेकर अहाज तक संघर्ष का जारी रहना।

**(1) योआश (कार्यकाल: 734-727ई.पू)**

ई.पू दसवीं से लेकर छठी शताब्दी के बीच में,आने वाले उद्धारकर्ता द्वारा उद्धार की प्रतिज्ञा को यहूदा के दक्षिणी राज्य (2½ गोत्रों)के राजाओं द्वारा आगे बढ़ाया गया था। समय समय पर इस्राएल का उत्तरी राज्य( 9½ गोत्र) मिलकर दक्षिणी राज्य अर्थात यहूदा पर चढ़ाई करते थे। अतल्याह, जो उत्तरी राज्य के राजा अहाब की दुष्ट बेटी, रोगी अहज्जयाह की माता (और ओम्री की पोती)(2 राजा 8:18,26-27)थी जिसने राजा दाऊद के राजकीय घराने के सारे राजकुमारों को मरवा दिया, क्योंकि वह सारा अधिकार अपने हाथों में रखना चाहती थी। इस बार वास्तव में ऐसा लगा कि शैतान उस वंशावली और उद्धार की योजना को मिटाने में कामयाब हो गया है जिसमें मसीह का जन्म होने वाला है।

**लेकिन** एक बार फिर से, सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर ने शैतान की युक्तियों को असफल कर दिया। यहोशीबा अर्थात राजा यहोराम की बेटी ने योआश को बचा लिया जो रोगी अहज्याह का बेटा था। योआश को मन्दिर में 6 वर्ष अर्थात तब तक छिपा कर रखा गया जब तक अतल्याह को मारकर उसे राजा न बना दिया गया(2 राजा 11:1-21)। यदि अतल्याह दाऊद के घराने के सारे वशजों को मारने में सफल हो जाती तो शैतान की जीत हो जाती और प्रतिज्ञा किये गये उद्धारकर्ता का कभी जन्म नहीं हो पाता।

**(2) अहाज (कार्यकाल 734-727 ई पू)**

उसके बाद इस्राएल के उत्तरी राज्य और अराम (सीरिया)ने मिलकर यहूदा के दक्षिणी राज्य को नाश करने की युक्ति बनायी(2 राजा 16:5)। ऐसा लगने लगा की आसपास के राज्य मिलकर परमेश्वर के लोगों को नाश कर देगें (जो लोग परमेश्वर पर विश्वास करते थे) और शैतान जीत जाएगा।

लेकिन भविष्यद्वक्ता यशायाह ने राजा आहाज से कहा,"इस कारण प्रभु आप ही तुमको एक चिन्ह देगा: सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी"(यशायाह 7:1-14)। परमेश्वर ने यह वायदा किया कि चाहे इतिहास में कैसी भी कठिन परिस्थिति रही हो,कोई भी मसीह अर्थात उद्धारकर्ता को इस दुनिया में आने से नहीं रोक सकता है। आने वाला उद्धारकर्ता "इम्मानुएल" कहलाएगा जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ है"(मत्ती 1:20-23)।

बाइबल हमें सिखाती है कि अविश्वासी संसार परमेश्वर के लोगों को नाश करने में कभी कामयाब नहीं हो पाएगा। कोई भी नेता या राष्ट्र परमेश्वर की योजना को पूरा होने से नहीं रोक सकता।

## 6.अहाज से एस्तेर तक सघंर्ष का ज़ारी रहना।

ईसा पूर्व पांचवी शताब्दी के दौरान,यहूदी(दक्षिणी राज्य यहूदा के वंशज)मेडो-परशियन साम्राज्य में हर जगह बस गये। दुष्ट हामान यहूदियों से नफरत किया करता था इसलिए उसने एक चाल चली और फारसी राजा क्षयर्ष को ऐसी आज्ञा पत्र निकालने के लिए मना लिया, जिससे उसे 12वें महीने के 13वें दिन तक,सारे यहूदी जवान व बूढ़े,स्त्री व बच्चों को मारने और उनके सामान को नाश करने का अधिकार मिल गया (एस्तेर 3:5-10,13)। संदेश वाहकों को इस आदेश के साथ सभी प्रान्तों में भेज दिया गया कि बारहवें महीने के तेरहवें दिन में सभी यहूदियों व उनकी समपत्ति को नाश कर दिया जाएगा(एस्तेर 3:13-14)। सारे यहूदियों को नाश करने की धमकी दी जा रही थी। यदि हामान अपनी युक्ति में सफल हो गया तो,शैतान जीत जाएगा और उद्धार को वास्तविकता बनने से रोकने में सफल हो जाएगा।

**लेकिन** परमेश्वर ने हामान की योजना को विफल करने के लिए रानी एस्तेर का इस्तेमाल किया। राजा क्षयर्ष ने हामान को फाँसी पर लटका दिया और यहूदियों के लिए उसने एक और आदेश पत्र निकाला जिसके अनुसार वे खुद पर होने वाले आक्रमण का मुँह तोड़ जवाब दे सकते तथा उन्हें लूट सकते हैं (एस्तेर 8:7-11)। 12वें महीने(अदार) की 14 व 15 तारीख को यह स्मरणोत्सव मनाया जाता है। परमेश्वर ने एक बार फिर से इस अनर्थ को होने से रोक लिया और शैतान को फिर हार झेलनी पड़ी।

## 7.एस्तेर से बेतलेहम तक संघर्ष का जारी रहना।

### ( 1 ) प्रकाशितवाक्य 12:4-5:अजगर और स्त्री।

यीशु मसीह व शैतान के बीच युगों से चलने वाली इस लड़ाई में, यीशु मसीह हमेशा ही विजयी हुए। पुराने नियम में चली यीशु मसीह व शैतान के बीच की लड़ाई का प्रतीक के रूप में प्रकाशितवाक्य 12:1-5 में वर्णन किया गया है।"वह अज़गर उस स्त्री के सामने जो जच्चा थी, खड़ा हुआ कि जब वह बच्चा जने तो वह उस बच्चे को निगल जाए। वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिये हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था, और वह बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया।" "वह स्त्री" पुराने नियम के समय में परमेश्वर के लोगों को दर्शाती है। वह प्रतिज्ञा किये हुए उद्धारकर्ता को जन्म देगी(यूहन्ना 4:22)। "अजगर" शैतान का प्रतीक है(प्रकाशित वाक्य 12:9)। और "बच्चा" मसीह अर्थात यीशु मसीह को दर्शाता है। पुराने नियम के सम्पूर्ण काल में,शैतान ने प्रतिज्ञा किये हुए उद्धारकर्ता के जन्म में बाधा डालने का प्रयास किया है।

लेकिन परमेश्वर ने इस बात की चौकसी की कि उद्धार के निमित्त उसकी योजना विफल न हो। और वह वास्तव में विफल नहीं हुई। न कोई वस्तु और न ही कोई व्यक्ति बाइबल के सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर की योजना को पूरा होने से नहीं रोक सकता(यशायाह 14:24,27)!

### ( 2 ) यूसुफ व मरियम।

अन्त में उद्धार के निमित्त मसीह के आने की प्रतिज्ञा यूसुफ व मरियम को दी गयी(लूका 1:26-38;मत्ती 1:18-25)। जब जगत के उद्धारकर्ता मसीह के इस संसार में जन्म लेने का समय आया तो,"अज़गर" ने उसे इस संसार में आने से रोकने का अपना अन्तिम प्रयास किया। रोमी राजा हेरोदेस(37ईसा.पू-4 ई प.)ने जब पूर्व से आये ज्योतिषियों से यह सुना कि उद्धारकर्ता का जन्म हो चुका है तो वह डर गया। वह यह सोचकर भयभीत था कि यह मसीह उसके स्थापित राज्य पर कब्ज़ा कर लेगा। इस कारण उसने बेतलेहम व उसके आसपास के प्रान्तों में दो वर्ष से छोटे शिशुओं की हत्या करने की आज्ञा दे दी(मत्ती 2:1-18)। एक बार फिस से ऐसा लगने लगा की हेरोदस राजा अपनी इस क्रूर योजना द्वारा सफल हो जाएगा।

लेकिन परमेश्वर की अनन्त योजना कभी असफल नहीं हो सकती और वह असफल नहीं हुई। परमेश्वर ने रात में ही युसुफ के पास एक स्वर्गदूत को भेजा और उससे कहा कि वह मरियम और बच्चे को लेकर रात ही में मिस्र को चला जाए। और वे तब तक मिस्र में ही रहे जब तक कि हेरोदेस राजा मर न गया।

### ( 3 ) यीशु मसीह।

जब यीशु मसीह ने धरती पर अपनी सेवाकाई का आरम्भ किया तब ही,"अज़गर" अर्थात शैतान ने यीशु को अपने कब्जें में करने के लिए उसकी परीक्षा की (पढ़ें मत्ती 4:1-11)। सबसे पहले शैतान ने यीशु को अपने आप भरोसा करने की परीक्षा में डाला (अपनी काबलियत पर भरोसा करके परमेश्वर से मुक्त होने की परीक्षा)। वह पत्थर को रोटी में बदल सकता था। उसके बाद शैतान ने परमेश्वर पर झूठा भरोसा करने की परीक्षा में डाला अर्थात बाइबल का गलत तरीके से इस्तेमाल करने के लिए उकसाया। वह चाहे तो छत पर से छलांग मार सकता है क्योंकि लिखा है कि स्वर्गदूत उसे हाथों हांथ उठा लेगें

और उसे बिल्कुल चोट न लगेगी। अन्त में शैतान ने यीशु से उस पर भरोसा और विश्वास करने की परीक्षा सामने रखी जिससे उसे सारे संसार के राज्य पर अधिकार प्राप्त हो सकता था।
लेकिन यीशु शैतान की हर एक परीक्षा पर जयवन्त हुआ और उसका नकाब़ हटाकर उसे झूठा साबित किया। (यूहन्ना 8:44)।

**( 4 ) प्रतिज्ञा पूरी हुईः यीशु मसीह ने शैतान को बांध दिया।**
यीशु मसीह संसार में शैतान के कामों को नाश करने के लिए आए(1यूहन्ना 3:8)। धरती पर रहते हुए उसके उद्धार के कामों के दौरान,यीशु ने दुष्टात्माओं को (शैतान की दुष्टात्माओं को) लोगों में से निकाला और अपना राज्य स्थापित किया(हुकुमत)(मत्ती 12:28-29)।
क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा यीशु मसीह ने शैतान की दुष्टात्माओं को निहत्था बना कर उन पर विजय प्राप्त की (कुलु 2:15)। उसके मृतकों में से जी उठने,उसके स्वर्गारोहण और उसके सिंहासन पर विराजमान होने के द्वारा यीशु ने शैतान को उसकी उपाधि 'संसार (पापमय) का सरदार' से गिरा दिया और अब वह सारे संसार पर जय के साथ राज्य करता है!

उस समय से लेकर आज तक यीशु सारे देशों व सारी जातियों के लोगों की अपने राज्य में अगुवाई कर रहा है। (यूहन्ना 12:31-32)। वह आज भी इस कार्य को कर रहा है। लोगों में सुसमाचार प्रचार किये जाने के द्वारा लोग शैतान के चंगुल से छुड़ाकर ज्योति के राज्य में प्रवेश कराये जा रहे हैं(कुलु 1:13)। इस तरह से उत्पत्ति 3:15 में परमेश्वर द्वारा की गयी प्रतिज्ञा पूरी हुई। यीशु मसीह,"स्त्री का वंश" जो असल में "अब्राहम के वंश"(अकेला) भी कहलाता है(उत्प 33:18; गलातियों 3:16)ने सर्प के सिर को कुचल दिया: यीशु ने शैतान पर विजय पा ली! यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन से लेकर अब तक,संसार की सारी शक्तियों व सारे हाकिमों पर राज्य किया है, चाहे उन्हें कोई भी नाम क्यों न दिया गया हो(मत्ती 28:18; इफिसियों 1:20-22; 1 पतरस 3:22)! उसके प्रथम आगमन से अब तक कोई भी जन उसे लोगों को अपने पास खींचने से नहीं रोक सका।

## पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने आने वाले उद्धारकर्ता के बारे में अनेकों भविष्यद्वाणियां कीं

आने वाले उद्धारकर्ता के बारे में पुराने नियम में की गयी भविष्यद्वाणियां संसार में पूरी हुई सबसे पुरानी भविष्यद्वाणियां हैं। भविष्यद्वक्ताओं ने भविष्यद्वाणी की कि आने वाला उद्धारकर्ता महानतम भविष्यद्वक्ता, अन्तिम महायाजक और सर्वोच्च राजा होगा।

**1. मानव इतिहास के आरम्भ में।**
परमेश्वर ने भविष्यद्वाणी की थी कि उद्धारकर्ता स्त्री से उत्पन्न होगा और शैतान के सिर को कुचलेगा(उत्प 3:15;लूका 3:23-37)

**2. 2100 ईसा पूर्व वर्षों पहले ।**
परमेश्वर ने अब्राहम से यह वायदा किया कि आने वाला उद्धारकर्ता "अब्राहम का वंशज " होगा, अर्थात वह अब्राहम के कुल में पैदा होगा और उसके द्वारा संसार की सभी जातियां आशीषित होगीं। (उत्प 12:3; 22:18; गलातियों 3:16)

**3. 1400 ईसा पूर्व वर्षों पहले।**
मूसा भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की थी कि आने वाला उद्धारकर्ता जीवतों के बीच में सर्वश्रेष्ठ भविष्यद्वक्ता होगा। वह परमेश्वर के मुख से निकली बातों का प्रचार करेगा। और परमेश्वर सभी लोगों से अपेक्षा करेगा कि वे उसकी आज्ञा मानें(व्यवस्थाविवरण 18:15-18; प्रेरितों 3:21-25)।

**4. 1000 ईसा पूर्व वर्षों पहले।**
दाऊद ने भविष्यद्वाणी की कि आने वाला उद्धारकर्ता मनुष्यों के बीच में सर्वश्रेष्ठ महायाजक होगा (भजन 110:4; इब्रानियों 3:1;4:14-15. 7:22-28)यद्यपि लोग उसे तुच्छ जानेगें, उसे क्रूस पर चढ़ाएगें उसके कपड़ों पर चिट्ठियां डालेगें(भजन 22:1-18),फिर भी वह अपने प्राणों की आहूति देकर उनके पापों का प्रायश्चित करेगा(यशायाह 53:6,10)।

**5. 700 ई पू वर्षों से पहले।**
मीका भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की कि आने वाला उद्धारकर्ता बेतलेहम शहर में पैदा होगा। (मीका 5:2;लूका 2:11-15)। और यशायाह भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी में कहा कि उसे "परमेश्वर हमारे साथ है" कहा जाएगा(यशायाह 7:14; मत्ती 1:20-23)। वह बहुत से लोगों के अपराधों के लिए क्रूस पर मारा जाएगा और बहुतों को धर्मी ठहरायेगा(यशायाह 53:5,11;रोमियों 4:25)। यशायाह भविष्यद्वक्ता ने यह भी भविष्यद्वाणी की कि आने वाला उद्धारकर्ता मनुष्यों में पैदा हुआ

सर्वश्रेष्ठ राजा भी कहलाएगा। वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर और अनन्त पिता के स्वभाव को धारण करेगा और उसकी धार्मिकता के राज्य का कभी अन्त न होगा। (यशायाह 9:6-7;लूका 1:30-33)!

**6. 400 ई.पू.वर्षों पहले।**

भविष्यद्वक्ता मलाकी ने भविष्यवाणी की कि आने वाला उद्धारकर्ता के आगे आगे चलने वाला एक जन पैदा होगा जो उसके आने के लिए मार्ग तैयार करेगा(मलाकी 3:1;4:5-6)। और वह भविष्यद्वक्ता यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था(मत्ती 11:11-14; 17:10-13)।

## घ. यीशु मसीह के जन्म के समय घटी घटनाएं

**1. देहधारण : परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर मनुष्य का रूप धारण किया।**

यीशु मसीह का अस्तित्व या वजूद उसके बेहलेहम में जन्म लेने के साथ शुरू नहीं हुआ था। वह आदि से परमेश्वर के साथ था वरन वह स्वयं परमेश्वर था। उसमें अनन्तता से ही परमेश्वर का ईश्वरी स्वभाव विद्यमान था(यूहन्ना 1:1-5,14-18)। जब सही समय आया तब यीशु ने बिना ईश्वरीय स्वभाव को त्यागे मानवीय स्वभाव को धारण किया और मनुष्यों के बीच में जन्म लिया। उस समय से लेकर यीशु में न केवल ईश्वरीय स्वभाव वरन मनुष्य स्वभाव भी विद्यमान था। वह शतप्रतिशत ईश्वर व शतप्रतिशत मनुष्य था(गलातियों 4:4;फिलिप्पियों 2:5-8; कुलु 2:9)। जब वह धरती पर था तो लोगों ने अपने बीच में उसे बढ़ते हुए देखा(लूका 2:52)। उन्होंने उसे छुआ,उसके चमत्कारों और उसके पापरहित जीवन को देखा,उसकी शिक्षाओं को सुना उसके उद्धार का अनुभव किया(1 यूहन्ना 1:1-3)।

**2. जर्कयाह को बताया जाना ।**

यीशु मसीह के जन्म से पहले एक स्वर्गदूत जर्कयाह के पास उसकी वृद्धावस्था में उसे यह बताने के लिए भेजा गया कि उसे एक पुत्र प्राप्त होगा। उसका पुत्र आने वाले उद्धारकर्ता का अग्रदूत होगा। जर्कयाह ने परमेश्वर के वचनों पर सन्देह किया इसलिए परमेश्वर ने उसे एक चिन्ह दिया- कि वह तब तक बोल नहीं पाएगा जब तक कि परमेश्वर का कहा वचन पूरा न हो जाए (लूका 1:5-25,57-79)! जब परमेश्वर का वचन पूरा हो गया तब जकर्याह ने यह कहते हुए स्तुति का गीत गाया, कि आने वाले उद्धारकर्ता में होकर परमेश्वर द्वारा अब्राहम से बांधी गयी वाचा पूरी हो जाएगी(लूका 1:72-73)! यीशु मसीह में होकर परमेश्वर का निष्पक्ष अनुग्रह संसार की सारी जातियों के लिए एक वास्तविकता बन जाएगा।

**3. मरियम को बताया जाना**

यीशु मसीह के जन्म से पूर्व, ज़िब्राईल फरिश्ता मरियम को दिखाई दिया और उसे बताया कि परमेश्वर का अनुग्रह उस पर हुआ है(लूका 1:26-56)। वह यीशु की माता बनेगी, लेकिन केवल उसके मानवीय स्वभाव के अनुसार! पवित्र आत्मा उस पर छाया करेगा और वह गर्भवती होगी। इस कारण, वह पवित्र बालक "परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा"(लूका 1:35)। उसके जन्म के कारण, वह परमेश्वर का पुत्र नहीं बन गया(क्योंकि वह तो आदि से ही परमेश्वर का पुत्र है)। वरन, उसके जन्म के द्वारा उसने बिना अपना ईश्वरीय स्वभाव त्यागे हुए मनुष्य का रूप धारण किया। यीशु हमेशा से ही ईश्वर था लेकिन अब उसने मनुष्य का स्वभाव को भी धारण कर लिया था। यद्यपि मानव इतिहास में ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था,इसलिए स्वर्गदूत ने कहा कि "परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है" (लूका 1:37)। जकर्याक से बिल्कुल विपरीत,मरियम ने परमेश्वर के वचनों पर ज़रा भी सन्देह नहीं किया। वरन उसने परमेश्वर की योजना पूरा होने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

**4. युसुफ को बताया जाना ।**

यीशु मसीह के जन्म से पहले स्वपन में एक स्वर्गदूत यीशु के सपनों में प्रगट हुआ और कहा कि जिस स्त्री से उसकी "मंगनी" हुई है, वह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से गर्भवति होगी। उन दिनों में मंगनी को कानूनी विवाह के रूप में देखा जाता था। युसुफ को उस बच्चे का नाम "यीशु" रखना था जिसका अर्थ "उद्धारकर्ता" था। वह सारे जगत के लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा। यूसुफ एक समर्पित पति था। उसने परमेश्वर के वचनों पर भरोसा किया। उसने न तो मरियम को त्यागा और न ही यीशु के जन्म तक उसके साथ सहवास किया(मत्ती 1:18-25)। रोमी जनगणना के तहत नाम लिखाने के लिए यीशु यूसुफ और मरियम ने नासरत से बेतलेहम तक यात्रा की। बेतलेहम में शिशु यीशु का जन्म हुआ(लूका 2:1-7)।

**5. चरवाहों को बताया जाना।**

यीशु मसीह के जन्म के पश्चात, एक स्वर्गदूत चरवाहों को दिखा और उनको बताया कि आने वाला उद्धारकर्ता बेतलेहम में पैदा हुआ है और यह ही मसीह है। उसके बाद हजारों स्वर्गदूत प्रगट हुए और गीत गाने लगे कि धरती पर जिन लोगों पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है परमेश्वर उन्हें शान्ति प्रदान करेगा। हर एक जन जो यीशु के अनुग्रह को स्वीकार करेगा उसका

परमेश्वर से मेल हो जाएगा। चरवाहे यीशु से मिलने के बाद, सबको यह खबर सुनाने लगे। यीशु के जन्म के आठ दिनों के बाद यीशु का खतना हुआ(लूका 2:8-24),क्योंकि वह "व्यवस्था के अधीन" पैदा हुआ था। (वह काल तब भी पुराने नियम के अधीन काल था)(गलातियों 4:4)।

**6.शिमौन को बताना**

बाद में,यूसुफ और मरियम यरूशलेम के मन्दिर में यीशु को परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करने के लिए ले गये(लैव्य. 12:1-8; निर्गमन 13:2,12,15)। पवित्र आत्मा ने शिमौन पर यह प्रगट किया था कि वह जब तक परमेश्वर के मसीह को न देख ले, न मरेगा। जब उसने यीशु को मन्दिर में देखा तो उसने गवाही दी कि यीशु ज्योति बनेगा और अन्यजातियों पर परमेश्वर को और इस्राएल पर परमेश्वर की महिमा को प्रगट करेगा। लोगों में मतभेद होगा और कुछ लोग यीशु मसीह के विरोध में और कुछ लोग यीशु मसीह के लिए बोलेगें। फिर भी, यह यीशु हर एक जन के मन के भेदों को खोलकर बता देगा। (लूका 2:25-35)।

**7.पूरब से आये ज्योतिषियों को दी गयी चेतावनी।**

इस दौरान यूसुफ व मरियम बेतलेहम के एक घर में बस गये। परमेश्वर ने पूरब से आये ज्योतिषियों की यीशु के जन्म स्थान तक अगुवाई करने के लिए एक तारे को ठहराया। ये ज्योतिषी सम्भवत: पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों के बारे में जानते थे,जो शायद उन्होंने प्रवासियों (बेबिलोन में मेडो-परसियन साम्राज्य के समय)के जैसे जीवन व्यतीत करते समय सुनी होगीं। जब उन्हें यीशु मिल गया,तो उन्होंने उसे भेटें चढ़ाईं, जो उस समय के कीमती उपहार थे और उसकी अराधना की। वे यीशु मसीह के सामने दण्डवत करने वाले लोगों में प्रथम थे। परमेश्वर द्वारा स्वपन में चेतावनी दिये जाने के बाद में कि वे हेरोदेस के पास वापस न जाएं,वे किसी और रास्ते से पूरब को लौट गये। राजा हेरोदेस और यरूशलेम में अन्य लोग मसीह-राजा के पैदा होने की खबर को सुनकर काफी परेशान थे। उसको खोजकर उसको दण्डवत करने के बजाय, लोग उसे मार डालने की मनसा से खोज रहे थे(मत्ती 2:1-12)।

**8. मिस्र को जाना और इस्राएल वापस आना।**

ज्योंतिषियों के जाने के बाद स्वर्गदूतों ने यूसुफ के पास जाकर कहा कि वह मिस्र देश को चला जाए,क्योंकि हेरोदेस राजा ने यीशु को घात करने की योजना बना ली थी। जब ज्योतिषि हेरोदेस राजा को मसीह-राजा के जन्म के बारे में कोई खबर देने वापस राजा के पास नहीं गये तो,राजा हेरोदेस ने बेतलेहम और आप पास के स्थानों में दो वर्ष से नीचे के सभी बालकों को मार डालने का आदेश दे दिया। जब तक अन्त नहीं सामने आया तब तक ऐसा प्रतीत होता रहा कि अब शैतान की जीत हो जाएगी।

लेकिन स्वर्गदूत ने यूसुफ को मिस्र देश में भाग जाने के लिए कहा। हेरोदेस के मरने के बाद परमेश्वर का स्वर्गदूत यूसुफ को दिखा और पुन: इस्राएल जाने का आदेश दिया। यूसुफ को स्वपन में ही सर्तक कर दिया गया था कि वह यहूदा में वापस ना जाए। अत: यूसुफ, यीशु ओर मरियम मिस्र से गलील के नासरत के लिए निकल पड़े,क्योंकि वे हेरोदेस के बेटे और नये राजा से डरते थे,जो यहूदा के बेतलेहम के नजदीक यरूशलेम में रहा करते था। अत: यीशु मसीह गलील में पला बढ़ा। (मत्ती 2:13-23)।

## ड.यीशु मसीह के जन्म का अभिप्राय

**1.यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर को मानवीय रूप में प्रगट करने के लिए पैदा हुआ।**

यूहन्ना1:1,14,18 में लिखा है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर मानवीय स्वभाव धारण करके मनुष्यों के बीच में डेरा किया जिससे कि हम परमेश्वर को जान सकें। यीशु ने कहा,"जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है"(यूहन्ना 14:9)। कुलुस्सियों 1:15 में लिखा है कि "वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है"।

क्रिसमस परमेश्वर की ज्योति का पर्व है। यीशु परमेश्वर की महिमा का प्रकाश है(इब्रानियों 1:3)।

**2.यीशु मसीह मनुष्यों के बीच में पैदा हुआ ताकि वह पापों से पश्चाताप करने वाले लोगों को बचा सके।**

यूहन्ना 3:16 में लिखा है,"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।" और 1 यूहन्ना 4:10 में लिखा है,"प्रेम इस में नहीं कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में हैं कि उसने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के लिए अपने पुत्र को भेजा"।

क्रिसमस, अनन्त जीवन प्रदान करने वाले परमेश्वर के प्रेम का पर्व है। उसके महान प्रेम के तहत,परमेश्वर ने सर्वश्रेष्ठ उपहार(क्रिसमस उपहार):अर्थात इस संसार को यीशु मसीह दिया। यूहन्ना 3:16 हमें सार्वभौमिक प्रायश्चित के बारे में नहीं सिखाता। यूहन्ना 3:16 में जिस "संसार" के बारे में कहा गया, वह वो संसार है "जिसमें मानवजाति वास करती है, जो परमेश्वर के जीवन से पृथक,पाप में डूबा, न्याय के कगार पर खड़ा है और इसीलिए उसे उद्धार की आवश्यकता है"। यह

ऐसा संसार है जिसमें बिना किसी विशेष आदर या मान्यता के सभी देश व जाति के लोग सम्मिलित हैं। इसके अलावा यह ऐसे लोगों से बना संसार है जिन्हें परमेश्वर की देखभाल की आवश्यकता है। परमेश्वर ने लोगों का उद्धार करने के लिए यीशु को जगत में भेजा। जो कोई यीशु पर विश्वास करेगा वह निश्चय ही नाश न होगा,वरन अनन्त जीवन पाएगा।

**3.यीशु मसीह अपने पापों से पश्चाताप न करने वाले लोगों का न्याय करने के लिए पैदा हुआ।**

लूका 2:34-35 में लिखा है,"देख वह तो इस्राएल में बहुतों के गिरने और उठने के लिए,और एक ऐसा चिन्ह होने के लिए ठहराया गया है जिसके विरोध में बातें की जाएगी,इससे बहुतों के विचार प्रगट होगें।

क्रिसमस लोगों के अलग होने का पर्व है। यीशु मसीह के कारण बहुत से लोग गिरेगें ओर बहुत से लोग उठेंगे। इसलिए सभी लोगों को निर्णय लेना चाहिए कि वे यीशु के विरोध में हैं या मसीह के साथ में। मत्ती 21:42-44 और 1 पतरस 2: 6-8 के अनुसार यीशु बहुत से लोगों के लिए "कोने के सिरे का पत्थर बन जाएगा"। जो लोग उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते निश्चय ही ठोकर खाकर गिरेगें। संसार का कोई भी जन यीशु मसीह के प्रथम आगमन के सन्दर्भ में उदासीन अवस्था में नहीं रह सकता। कोई भी जन क्रिसमस के सन्देश को लेकर उदासीन अवस्था में नहीं रह सकता।

| | | |
|---|---|---|
| **5** | **प्रार्थना** (8 मिनट) | ***[ प्रतिक्रियाएं]***<br>**दूसरों के लिए प्रार्थना करें** |

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

| | | |
|---|---|---|
| **6** | **तैयारी** (2 मिनट) | ***[ निर्धारित कार्य]***<br>**अगले अध्याय के लिए** |

***(समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण :** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। मरकुस 4:20-7:37** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
3. **याद करें।** (2)शुद्धता: 1पतरस 2:11। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
4. क्रिसमस अर्थात यीशु के जन्म के स्मरणोत्सव" पर -किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।
5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना रचित सुसमाचार पढ़ें**। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं। अगले अध्याय में यूहन्ना रचित सुसमाचार का परिचय दिया जायेगा।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7- मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।